International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 8; August 2016; Page No. 375-381

कृषि लागत, कृषि आय एवं कृषक जीवन स्तर का सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन (ग्राम परसिया, तहसील बीसलपुर जनपद पीलीभीत के विशेष सन्दर्भ में)

[1] Dr Mohammad Israr Khan, [2] Ram singh

[1] Assistant Professor, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

[2] Research Scholar, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

सारांश

वर्तमान समय में बढ़ती कृषि लागतों एवं लगभग स्थिर कृषि उत्पाद मूल्य तथा प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता में गिरावट के परिपेक्ष्य में कृषि लाभ के व्यवसाय का दर्जा खोती जा रही है। शोध पत्र में इन्हीं बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए जनपद पीलीभीत के बीसलपुर तहसील के ग्राम परसिया का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित शोध अध्ययन में सामान्य रूप से कृषकों में कृषि कार्य के प्रति उदासीनता तथा घटती अभिरूचि दृष्टिगोचर होती है।

वृहत आर्थिक कारणों के अतिरिक्त कृषक स्तर पर कृषि आगतों के मूल्य में वृद्धि तथा तद्नुरूप कृषि उत्पादों के मूल्य में वृद्धि न होने से कृषि उत्पाद राजस्व का कम होना पाया गया है जिससे कृषि की लाभदायकता उत्साहजनक नहीं रहती है।

मूलशब्द: कृषि आगत, कृषि उत्पाद मूल्य, कृषि लाभदायकता, किसानों का जीवन स्तर।

1. प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसमें लगभग 121.08 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। इसमें से लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या कृषि करती है और 121.08 करोड़ जनसंख्या को खाद्यान्न उपलब्ध कराती है। उद्योगों के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध कराती है। खाद्यान्न और कच्चा माल उपलब्ध कराने के लिए आगतों की आवश्यकता पड़ती है कृषि में प्रयुक्त होने वाले साधनों जैसे–उर्वरक, श्रम, भूमि, ट्रैक्टर, पशु, सिंचाई, दवाईयाँ, बीज और परिवहन आदि सभी की आवश्यकता पड़ती है जिन्हें हम कृषि आगत कहते हैं। इन्हें खरीदने के लिए जिस धन की आवश्यकता पड़ती है उसे हम कृषि लागत कहते हैं।

अध्ययन के क्षेत्र ग्राम परसिया के किसान खेती छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं क्योंकि कृषिगत साधनों की लागत इतनी ज्यादा हो गई है कि किसानों को बचत नहीं हो रही है और न ही अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला पा रहे हैं, क्योंकि उन्हें खेतों में प्रयोग होने वाले साधन जुटाने पड़ते हैं। उन्हें खरीदने के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है और यह धन अगर नहीं है तो किसान बैंक या साहूकार से ऋण लेता है। फिर किसान ऋण ग्रस्त हो जाता है और लागत अधिक आने के कारण बचत हो नहीं पाती है।

जिस प्रकार कृषिगत साधनों के मूल्य बढ़ रहे हैं। उस हिसाब से कृषि उत्पादन के मूल्य बहुत कम बढ़ रहे हैं। जिसमें किसानों को कम आय प्राप्त हो रही है, जिससे किसान कृषि छोड़ रहे हैं। किसानों को जो कृषि से आय प्राप्त होती है। उससे खर्चा चलाना बहुत मुश्किल है। कृषि लागत से किसानों की आर्थिक स्थिति एवं जीवन स्तर बहुत खराब हो रहा है। किसानों की आर्थिक स्थिति और जीवन स्तर में सुधार नहीं हो रहा है। जिससे किसान कृषि छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं क्योंकि कृषि एक घाटे का व्यवसाय हो गया है।

2. अध्ययन का क्षेत्र

जनपद पीलीभीत में तीन तहसीलें हैं। जिसमें 1442 गाँव हैं उन सभी ग्रामों में कृषि की जाती है और हमारा अध्ययन का क्षेत्र जनपद पीलीभीत की तहसील बीसलपुर में लगभग 482 गाँव है। इनमें से ग्राम परसिया हमारा अध्ययन का क्षेत्र है। ग्राम परसिया के दक्षिण में एक बहुत पुराना नटवीर बाबा की मढ़ी है और गाँव में पांच तालाब हैं, और गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय है और इसके अलाबा सुभाष चन्द्र बोस जूनियर हाईस्कूल भी है, जो मान्यता प्राप्त है। ग्राम परसिया में कृषि उत्पादन का क्षेत्रफल लगभग 130 हेक्टेयर है जिस पर कृषि उत्पादन किया जाता है। ग्राम परसिया में जनगणना 2011 के अनुसाार लगभग 1811 जनसंख्या है जिसमें से लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या कृषि में कार्यरत है।

3. शोध समस्या

कृषि उत्पादन के लिए अनेक आगत साधनों का प्रयोग किया जाता है। जिनके माध्यम से उत्पादन सम्भव होता है। ये आगत प्रमुख है जैसे भूमि, श्रम, उर्वरक, मशीनें, पशुधन, सिंचाई, बीज, परिवहन और कीटनाशक दवायें आदि।

जिन किसानों के पास भूमि कम है या नहीं है वे कृषि करने के लिए भूमि पट्टे पर लेते हैं, जिस भूमि की पट्टे की कीमत वर्ष 2010–11 में 1500 रुपये बीघा थी, जो 2014–15 में बढ़कर 2000 से 3000 रुपये प्रति बीघा हो गयी है जो बहुत अधिक है और कृषि में कार्य करने वाले मजदूरों की मजदूरी 2010–11 में 100 रुपये से 120 रुपये प्रतिदिन थी, जो वर्ष 2014–15 में मजदूरी बढ़कर 200 से 225 रुपये प्रतिदिन हो गयी है। रासायनिक उर्वरकों की कीमतों में भी वृद्धि हो रही है। वर्ष 2010–11 में यूरिया 450 रुपये प्रति क्विन्टल मिलती थी और एन0पी0के0 932 और डी0ए0पी0 1132 रुपये प्रति क्विन्टल मिलती थी। और वर्ष 2014–15 में यूरिया, एन0पी0के0 और डी0ए0पी0 की कीमत 668, 2178 और 2378 रुपये प्रति क्विन्टल हो गई है, जो लगातार बढ़ रही है। जिससे किसानों

की लागत लगातार बढ़ती जा रही है और किसानों के लाभ बहुत कम गये हैं।

किसानों की उपज के मूल्य में बहुत कम वृद्धि हुई है। धान का मूल्य 2010–11 में 1000 रुपये प्रति कु0 था और 2014–15 में 1360 रुपये प्रति कु0 हुआ है जो कम है गेहूँ की कीमत 2010–11 में 1120 रुपये प्रति कु0 था, जो 2014–15 में 1450 रुपये प्रति कु0 हो गया है और गन्ने का मूल्य 2010–11 में 220 रुपये प्रति कु0 था, जो 2014–15 में 290 रुपये प्रति कु0 हो गया है।

इसी प्रकार परिवहन लागत में भी वृद्धि हुई है। ग्राम परसिया से पीलीभीत मण्ड़ी में माल ले जाने पर 2010–11 में 15 रुपये प्रति कु0 किराया लगता था जो 2014–15 में 30 रुपये प्रति कु0 हो गया है। जिससे किसानों की लागत बढ़ती जा रही है। और आय कम प्राप्त होती है। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति दयनीय है और किसानों का जीवन स्तर निम्न बना हुआ है।

4. शोध के उद्देश्य

कृषि क्षेत्र में किसानों के सामने अनेक प्रकार की समस्या आती हैं जैसे लगातार बढ़ती आगत लागत। इस समस्या को ध्यान में रखकर इस शोध–पत्र में निम्न उद्देश्यों पर कार्य करना सुनिश्चित किया गया है–

1. कृषि में किसानों की बढ़ती उत्पादन लागत एवं घटते कृषि उत्पाद राजस्व की समस्या का मूल्यांकन।
2. बढ़ती कृषि उत्पादन लागत के प्रभावों से किसानों की आय एवं उनके जीवन स्तर का मूल्यांकन करना।
3. किसानों के सामाजिक स्तर में कृषिगत आय से होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना।

5. शोध साहित्य समीक्षा

सिंह और सिंह (2003) के अनुसार हरित क्रान्ति के दौरान बीज और खाद के प्रयोग के अतिरिक्त ट्रैक्टर्स, पंपिंग सेटस और कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग बढ़ा है। जिससे उत्पादन बढ़ा है। हरित क्रान्ति के बाद कृषि क्षेत्र में आगत के प्रयोग में विविधता आई है। उन्नतशील बीज रासायनिक खाद, पानी, कीटनाशक दवाईयाँ और कृषि यन्त्रों के प्रयोग में पर्याप्त वृद्धि हुई है जिससे किसानों की लागत बढ़ रही है। लेकिन लागत के हिसाब से उत्पादन नहीं बढ़ रहा है।

यादव, सिंह और शर्मा (2008) के अनुसार कृषि आगतों का तात्पर्य उन साधनों से है, जो कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होते हैं। वर्तमान समय में कृषि आगतों के प्रयोग से उत्पादन बढ़ रहा है, क्योंकि पहले मशीनों का प्रयोग नहीं होता था। श्रम का अधिक प्रयोग होता था, गोबर की खाद की जगह रासायनिक खाद का प्रयोग होने लगा है। रासायनिक खाद और कीटनाशक का अधिक प्रयोग करने से उर्वरा शक्ति कम हो गई है।

मिश्र (2007) के अनुसार कृषि उत्पादन कार्य अनेक साधनों के सामूहिक सहयोग एवं प्रयास से सम्पन्न किया जाता है। जिससे भूमि, श्रम, पूँजी, साहस एवं प्रबन्ध का उत्पादन की प्रक्रिया में योगदान है। कृषि उत्पादन के क्षेत्र में यह सभी कारक समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। किसी भी कारक सीमितता की अवस्था में कार्य करने के लिए उत्पादन के विभिन्न कारकों को भिन्न–भिन्न मात्राओं में कृषक उपयोग करते है। उत्पादन के कारकों के अनुकूलतम संयोग से कार्य पर उत्पादन लागत में कमी आती है तथा उत्पादन अधिकतम प्राप्त होता है।

सोनी (2004–05) के अनुसार कृषि उत्पादों के न्यूनतम मूल्यों को निर्धारित करने के लिए वास्तविक औसत लागत को आधार बनाया जाता है या फिर ऐच्छिक पूर्ति के लिए उत्पादित अन्तिम इकाई की उत्पादन लागत को उत्पादन लागत का अनुमान लगाना काफी कठिन है, जो कि फसलों के उत्पादन के लिए संयुक्त रूप से लगायी जाती है उनका प्रत्येक फसल के लिए अलग–अलग से बाँटने का कोई सन्तोषजनक ढंग नहीं है इसके अतिरिक्त औसत लागत की धारणा स्वयं भी एक प्रकार से भ्रान्तिपूर्ण है।

पुरी और मिश्र (2014) के अनुसार जहाँ पर सिंचाई की व्यवस्था है। वहाँ पर उर्वरकों के प्रयोग से उत्पादकता में भारी वृद्धि होती है। उर्वरकों के प्रयोग द्वारा भूमि के नष्ट होने वाली उर्वराशक्ति को न केवल फिर प्राप्त किया जा सकता है, बल्कि उसे बढ़ा सकना भी सम्भव होता है और उन्नतशील किस्म के बीजों के प्रयोग पर बहुत जोर दिया जाता है। हालाँकि सरकार योजना काल के आरम्भ से ही बीजों के किस्म में सुधार के प्रयास करती रही है और खेतों में मशीनीकरण कई प्रकार से लाभकारी है। यही कारण है कि सभी विकसित देशों में खेती की सभी क्रियायें मशीनों की सहायता से सम्पन्न की जाती है, लेकिन इसके बाद मशीनों का भारत में प्रयोग बढ़ा जिससे उत्पादन बढ़ा है।

वर्मा (17.01.2015 अमरउजाला) के अनुसार राज्य घरेलू उत्पाद में गिरावट दर्शा रहे है कि प्रदेश की आर्थिक सेहत ठीक नहीं है। प्रदेश सरकार को इस खतरे की घंटी के रूप में लाना चाहिए। कृषि क्षेत्र पर 65 फीसदी लोग निर्भर है बहुत सारे उद्योगों में कच्चा माल कृषि क्षेत्र से आता है। कृषि उत्पादन व उत्पादकता प्रभावित होने का सीधा असर उद्योगों पर पड़ेगा। यदि गाँव की क्रयशक्ति कम होगी तो औद्योगिक उत्पादन की मांग घटेगी। यही सर्विस सेक्टर का भी है। एक बड़ी आबादी की क्रयशक्ति कम रहेगी, तो बाजार में आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित होगी। आने वाले समय में विकास दर बेहतर हो, इसके लिए सरकार को सबसे पहले कृषि क्षेत्र पर ध्यान देना होगा। किसानों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। खेत और बाजार के बीच की खाई बहुत बढ़ गई है। जिसमें सुधार करना बहुत जरूरी है।

वेणु (अमर उजाला, 10 जनवरी 2015) के अनुसार देश के किसान समुदाय के लिए नये वर्ष की सुबह एक दुःस्वप्न की तरह आई। दिसम्बर 2014 के आखिरी हफ्ते में महाराष्ट के विदर्भ क्षेत्र के 1 दर्जन किसानों ने फसल बर्बाद होने के कारण आत्महत्या कर ली, क्योंकि पिछले कुछ महीनों में वैश्विक कृषि उत्पादन की कीमत में 30 फीसदी तक गिरावट आई है और स्थानीय किसानों को घरेलू स्तर पर उपज की ऊँची कीमत मिलने की सम्भावना नहीं है। वर्तमान सरकार ने किसानों के लिए एक न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोत्तरी की है। वह पिछले कुछ वर्षों की तुलना में काफी कम है यह तब है जब वर्तमान सरकार ने चुनाव प्रचार के दौरान किसानों से स्पष्ट वायदा किया था कि उन्हें कृषि लागत के ऊपर 50 फीसदी का मुनाफा दिया जायेगा। यह वायदा अब तक पूरा नहीं हुआ है। यह सब ऐसे समय में हो रहा है, जब वैश्विक कृषि उत्पादों की कीमत में गिरावट के कारण कृषक समुदायों का संकट बढ़ रहा है।

भारत (2012) के अनुसार स्थाई कृषि का राष्ट्रीय मिशन जलवायु परिवर्तन पर तैयार राष्ट्रीय कार्य योजना के अन्तर्गत चलाया जाने वाला आठवाँ मिशन है। इसके तहत खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने जीवन यापन के अवसर उपलब्ध कराने और राष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था को स्थिर बनाने के लिए जलवायु परिवर्तन के प्रभाव जो कम करने के उपयुक्त उपाय और नीतियाँ तैयार करने के सम्बन्ध में स्थाई कृषि के मुद्दे पर विचार और इस मिशन को अनुसंधान और विकास प्रौद्येगिकी, उत्पाद और कार्य प्रणाली ढाँचागत सुविधायें और क्षमता निर्माण के जरिये उपयुक्त उपाय और नीतियों को तैयार करने के साथ कार्यक्रम के कार्यान्वयन स्थाई कृषि प्रणाली को प्रोत्साहित करने के इस आयामों की पहचान की गयी है। इसमें कृषि उत्पादन में स्थायित्व लाने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी और अनुसंधान की भूमिका की पहचान के साथ ही

पारस्परिक तौर तरीकों और आनुवांशिक संसाधनों के संरक्षण को बनाये रखने वाली कृषि विरासत पर भी बल दिया गया है।

6. शोध की विधि

यह शोध–पत्र प्राथमिक व द्वितीयक समंक पर आधारित है। साथ में प्राथमिक समंकों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली तैयार कर कृषकों से प्रश्न पूंछकर उनके ऊपर प्रदत्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। द्वितीयक समंकों के लिए रिपोर्ट, कृषि मन्त्रालय की रिपोर्ट, विकास भवन, कृषि भवन तथा अन्य सम्बन्धित संस्करण एवं पुस्तकालय के आँकड़ों को एकत्रित किया गया है और साथ में क्षेत्र के विकास के आँकड़ों को एकत्र किया गया है।

7. शोध का महत्व

इस शोध–पत्र के माध्यम से किसानों से किसानों की बढ़ती उत्पादन लागत की स्थिति का पता लगाया जायेगा और किसानों की आय का भी पता लगाया जा सकता है और इस लघु शोध के माध्यम से किसानों की बढ़ती उत्पादन लागत को कैसे कम किया जाये। सरकार की कृषि नीति बनाने में सहयोग कर सकती है। इस प्रकार इस शोध–पत्र के माध्यम से किसानों को कम लागत पर उत्पादन करने में मदद मिलेगी। जिससे किसानों की स्थिति में सुधार होगा और किसान इस लघु शोध को पढ़कर कृषि लागत कम कर सकेगें। जिससे किसानों का जीवन स्तर सुधरेगा। इस लघु शोध का महत्व किसानों की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालेगा और इस लघु शोध के माध्यम से सरकार को भी पता चलेगा कि किसानों की उत्पादन लागत कितनी आती है तथा सरकार शोध–पत्र के माध्यम से किसानों की लागत कम करने का प्रयास करेगी। जिससे किसानों को अधिक आय प्राप्त होगी और किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

8. विश्लेषण

8.1 साधन मूल्य और उत्पाद मूल्य

जनपद पीलीभीत की तहसील बीसलपुर के ग्राम परसिया के किसानों से पाँच वर्षों के साधन मूल्य और उत्पाद मूल्य की जानकारी प्राप्त की गई है। जिसे तालिका संख्या 01 में दर्शाया गया है।

तालिका 01: पाँच वर्षों के साधन मूल्य और उत्पाद मूल्य

क्र0 सं0	मदें	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15	पांच वर्षीय औसत मूल्य	मूल्यों में वृद्धि (:) में 2010–11 से 2014–15
A.	**उर्वरक मूल्य प्रति क्विंटल**							
1.	यूरिया	450	490	550	620	668	555.6	48.44
2.	एन0पी0के0	932	932	1300	1824	2178	1433.2	133.69
3.	डी0ए0पी0	1132	1132	1520	2020	2378	1636.4	110.07
4.	सुपर	360	400	500	580	780	524.0	116.66
	औसत मूल्य	718.5	738.5	967.5	1261	1501	1037.3	102.21
B.	**दवाईयाँ प्रति किलोग्राम**							
1.	व्यूटा क्लोर	100	120	150	200	250	164.0	150.0
2.	ट्राईको ड्रामा	125	125	100	100	100	110.0	.25.00
3.	सल्फो सल्फरान	314	314	360	439	439	373.2	39.80
4.	सी0ओ0सी0	180	180	250	397	397	280.8	120.55

स्रोत– कृषि इकाई केन्द्र बीसलपुर

C.	बीज मूल्य प्रति क्विंटल							
1.	धान	1500	2000	3000	3500	4000	2800	166.66
2.	गेहूँ	1500	1500	1800	2000	2200	1800	46.66
3.	गन्ना	220	240	290	300	300	270	36.36
	औसत मूल्य	1073.33	1246.66	1696.66	1933.33	2166.66	1623.33	83.22

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण

D.	जुताई और सिंचाई प्रति एकड़ मूल्य							
1.	**हैरो**	1125	1125	1500	1625	1875	1450	66.66
2.	**सिंचाई**	1218.75	1312.5	1500	1875	1875	1556.25	53.84
	औसत मूल्य	1171.87	1218.75	1500	1750	1875	1503.12	60.25

स्रोत–प्राथमिक सर्वेक्षण

E.	मजदूरी प्रतिदिन							
	मजदूरी	100.120	120.130	140.150	170.200	200.225	146.165	100
F-	**परिवहन किराया प्रति क्विटंल**							
1.	धान	15	15	20	25	30	21	100
2.	गेहूँ	15	15	20	25	30	21	100
3.	गन्ना	10	10	15	20	25	16	150
	औसत–किराया	13.33	13.33	18.33	23.33	28.33	19.33	116.66

स्रोत–प्राथमिक सर्वेक्षण

भारत एक कृषि प्रधान देश होने के बावजूद भारत के किसान कृषि छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं। क्योंकि कृषि साधनों की कीमत लगातार बढ़ रही है। वर्ष 2010–11 में यूरिया, एन0पी0के0 और डी0ए0पी0 450, 932 और 1132 रूपये प्रति क्विन्टल मिलती थी जो वर्ष 2014–15 में यूरिया एन0पी0के0 और डी0ए0पी0 668, 2178 और 2378 रूपये प्रति मिल रही है। वर्ष 2010–11 में सी0ओ0सी0, व्यूटाक्लोर, ट्राइकोड्रामा और सल्फो सल्फारान की कीमत क्रमशः 180, 100, 125 और 314 रूपये प्रति कि0ग्राम थी जो वर्ष 2014–15 में सी0ओ0सी0, व्यूटा क्लोर, ट्राईकोड्रामा और सल्फोसल्फरान की कीमत बढ़कर क्रमशः 397, 250, 100 और 439 रूपये प्रति कि0ग्राम हो गयी है। वर्ष 2010–11 में धान, गेहूँ और गन्ना के बीज की कीमत 1500, 1500 और 220 रूपये प्रति क्विन्टल थी जो वर्ष 2014–15 में धान, गेहूँ और गन्ने के बीज की कीमत क्रमशः 4000, 2200, और 300 रूपये प्रति क्विन्टल हो गयी है।

वर्ष 2010–11 में एक एकड़ खेत में लगभग 1125 रूपये की जुताई होती थी जो वर्ष 2014–15 में प्रति एकड़ जुताई का खर्चा लगभग 1875 रूपये हो गया है। वर्ष 2010–11 में एक एकड़ धान की सिंचाई करने में केवल तीन बार पानी लग रहा है तो 1218.75 का खर्चा हो रहा था जो वर्ष 2014–15 में एक एकड़ धान की सिंचाई करने में केवल तीन बार पानी लग रहा है तो 1875 रूपये खर्चा आ रहा है। वर्ष 2010–11 में मजदूरी 100–120 प्रतिदिन थी जो वर्ष 2014–15 में मजदूरी 200–225 रूपये प्रति दिन हो गई है। और वर्ष 2010–11 में परिवहन किराया 15 रूपये प्रति क्विन्टल था जो वर्ष 2014–15 में 30 रूपये प्रति क्विन्टल हो गया है। कीमत के साथ साथ साधनों की मात्रा भी बढ़ती जा रही है। क्योंकि वर्ष 2010–11 में यूरिया, एन0पी0के0 क्रमशः 1 क्विन्टल और 50 कि0ग्राम प्रति एकड़ धान में प्रयोग की जाती थी। लेकिन 2014–15 में यूरिया और एन0पी0के0 क्रमशः 2 क्विन्टल और 75 कि0ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग की जा रही है। जिससे लागत बहुत बढ़ती जा रही है।

8.2 उत्पाद मूल्य में वृद्धि

ग्राम परसिया के किसानों से पाँच वर्षों के उत्पाद मूल्य की प्रति वर्ष की जानकारी प्राप्त की गई है। जिसे तालिका संख्या 02 में दर्शाया गया है।

तालिका 02: प्रतिवर्ष उत्पाद मूल्य में वृद्धि

क्र0 सं0	मदें	2010.11	2011.12	2012.13	2013.14	2014.15	औसत मूल्य	वृद्धि (:) में
1.	**धान**							
(i)	सामान्य	1000	1080	1250	1310	1360	1237	55.26
(ii)	ग्रेड (ए)	1030	1110	1280	1345	1400		
(iii)	हाईब्रिड	880	980	1500	1500	1530		
2.	गेहूँ	1120	1285	1350	1400	1450	1321	29.46
3.	गन्ना	220	245	290	290	290	267	31.81

स्रोत–प्राथमिक सर्वेक्षण

फसलों के मूल्य में बहुत कम वृद्धि हुई है वर्ष 2010–11 में धान सामान्य, ग्रेंड (।) और हाईब्रिड का मूल्य 1000, 1030 और 880 रूपये प्रति क्विन्टल था जो वर्ष 2014–15 में धान सामान्य, ग्रेड (।) और हाईब्रिड का मूल्य 1360, 1400 और 1530 रूपये प्रति क्विन्टल हो गया है। इसी प्रकार 2010–11 में गेहूँ और गन्ने का मूल्य 1120 और 220 रूपये प्रति क्विन्टल था जो वर्ष 2014–15 में गेहूँ और गन्ने का मूल्य 1450 और 290 रूपये प्रति क्विन्टल हो गया है। जोकि फसलों के मूल्य में बहुत कम वृद्धि हुई है। इस प्रकार देखा जाये तो साधनों के मूल्य में बहुत तेजी से वृद्धि हो रही है और फसलों के मूल्य में बहुत कम वृद्धि हो रही हैं। इसके साथ प्रति एकड़ उत्पादन तो बढ़ रहा है लेकिन प्रति इकाई लागत बहुत आ रही है।

ग्राम परसिया के किसानों से उत्पाद मूल्य की जानकारी प्राप्त कर पाँच वर्षों में साधन के औसत मूल्य और औसत प्रतिशत वृद्धि को निकाला गया है। जिसे तालिका संख्या 03 में दर्शाया गया है।

पाँच वर्षों के साधन मूल्य पर सर्वेक्षण किया गया तो पाया गया कि उर्वरक का पाँच वर्षों का औसत मूल्य 1037.3 रुपये है और पाँच वर्षों में औसत वृद्धि 102.21 प्रतिशत हुई है और दवाई के पाँच वर्षों के औसत मूल्य 232.0 रुपये है दवाई में औसत वृद्धि 71.33 प्रतिशत हो गयी है। बीज के पाँच के औसत मूल्य 1623.33 रुपये है। बीजों में औसत वृद्धि 83.33 प्रतिशत हो गई है और तकनीक श्रम के पाँच वर्षों के औसत मूल्य 1503.12 रुपये है तकनीक श्रम में औसत वृद्धि 60.25 की हो गयी है। पाँच वर्षों के श्रम के औसत मूल्य 165.00 है। औसत वृद्धि 100 हो गई है और परिवहन के पाँच वर्षों के औसत मूल्य 19.33 रुपये है। पाँच वर्षों में औसत वृद्धि 116.66 प्रतिशत हो गई है। इस प्रकार औसत मूल्य और औसत प्रतिशत में अधिक वृद्धि हो रही है। बाजार साधन–मूल्य का अनुपात अधिक हैं जबकि घरेलू साधन–मूल्य का अनुपात कम है जिससे किसानों का अधिक धन बाजार साधन खरीदने में चला जाता है जिससे राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय कम्पनियों को अधिक लाभ हो रहा है और किसान को बहुत कम लाभ हो रहा है क्योंकि उत्पाद–मूल्य में कम बढ़ोत्तरी हो रही हैं।

तालिका 03: साधन औसत मूल्य और औसत प्रतिशत वृद्धि

क्र0सं0	साधन	औसत मूल्य	औसत प्रतिशत
A	**बजार साधन**		
1.	उर्वरक	1037.3	102.21
2.	दवाई	232.0	71.33
3.	बीज	1623.33	83.33
औसत मूल्य का योग		**2892.63**	
B	**घरेलू साधन**		
1.	तकनीक श्रम	1503.12	60.25
2.	श्रम	165.00	100.00
3.	परिवहन	19.33	116.66
औसत मूल्य का योग		**1677.45**	
C	बाजार साधन एवं घरेलू साधनों का अनुपात– **29:17**		

स्रोत–प्राथमिक सर्वेक्षण

किसानों से पाँच वर्षों में उत्पाद मूल्य में हुई वृद्धि की जानकारी प्राप्त कर पाँच वर्षों के औसत उत्पाद मूल्य और औसत प्रतिशत वृद्धि को निकाला गया है। जिसे तालिका संख्या 04 में दर्शाया गया है।

तालिका 04: औसत उत्पाद मूल्य और औसत प्रतिशत

क्र0सं0	मदें	औसत मूल्य	औसत प्रतिशत
1.	धान	1237	55.26
2.	गेहूँ	1321	26.46
3.	गन्ना	267	31.81

स्रोत–प्राथमिक सर्वेक्षण

पाँच वर्षों के औसत उत्पाद मूल्य और औसत प्रतिशत के लिए धान, गेहूँ और गन्ना तीन फसलों को लिया गया है। धान का पाँच वर्षों का औसत मूल्य 1237 रुपये है और औसत वृद्धि 55.26 की हो रही है और गेहूँ का पाँच वर्षों के औसत मूल्य 1321 रुपये है जिसमें औसत वृद्धि मात्र 26.46 प्रतिशत की हुई है। इसके बाद गन्ना का पाँच वर्षों का औसत मूल्य मात्र 267 रुपये पाया गया है। जो कि गन्ने में पाँच वर्षों में औसत वृद्धि मात्र 31.81 प्रतिशत हो पायी है। इससे पता चलता है कि साधनों की लागत में औसत प्रतिशत वृद्धि बहुत अधिक हो रही है और उत्पाद मूल्य में औसत प्रतिशत वृद्धि बहुत कम हो रही है।

तालिका संख्या 1 के आधार पर 2014–15 में धान में प्रति एकड़ लागत को तालिका सं0 05 में दर्शाया गया है।

तालिका 05: धान में प्रति एकड़ लागत 2014–15 में

क्र0सं0	मदें	मूल्य
1.	एन0पी0के0	1633.5
2.	यूरिया	1336.0
3.	ट्राईकोड्रामा	100.0
4.	ब्यूटाक्लोर	250.0
5.	सी0ओ0सी0	397.00
6.	बीज	280.00
7.	जुताई	1875.00
8.	सिंचाई	1875.00
9.	मजदूरी	8100.00
10.	परिवहन	540.00
	कुल लागत	16386.5

स्रोत–प्राथमिक सर्वेक्षण

वर्ष 2014–15 में एक एकड़ धान में 1633.5 की एन0पी0के0 प्रयोग की जाती है। और यूरिया 1336.0 रुपये की प्रयोग की जाती है। एक एकड़ धान में 100 रुपये की ट्राईकोड्रामा दवाई प्रयोग की जाती है तथा खरपतवार के लिए 250 रुपये की ब्यूटाक्लोर प्रयोग की जाती है और 397 रुपये की सी0ओ0सी0 दवाई प्रयोग की जाती है। एक एकड़ धान लगाने के लिए 280 रुपये का धान का बीज पड़ता है और एक एकड़ खेत में जुताई का खर्चा लगभग 1875 रुपये आ जाता है तथा केवल तीन बार पानी की सिंचाई की जाती है तो लगभग 1875 रुपये का खर्चा आ जाता है, एक एकड़ धान में देखभाल छोड़कर लगभग 8100 रुपये श्रम का खर्चा आ जाता है और पीलीभीत मंडी तक धान ले जाने में 30 रुपये प्रति क्विन्टल का खर्चा आ जाता है। इस प्रकार एक एकड़ धान में लगभग 16386.5 रुपये का खर्चा आता है।

तालिका संख्या 1 के आधार पर 2014–15 में गेहूँ में प्रति एकड़ लागत को तालिका सं0 06 में दर्शाया गया है।

तालिका 06: गेहूँ में प्रति एकड़ लागत 2014–15 में

क्र0सं0	मदें	मूल्य
1.	एन0पी0के0	1633.5
2.	यूरिया	1336.0
3.	ट्राईकोड्रामा	100.0
4.	सी0ओ0सी0	397.00
5.	गुल्ली डण्डा की दवाई	250.0
6.	बीज	1320.0
7.	जुताई	1875.00
8.	सिंचाई	1875.00
9.	मजदूरी	5850.0
10.	परिवहन	450.00
	कुल लागत	15086.5

स्रोत–प्राथमिक सर्वेक्षण

वर्ष 2014–15 में एक एकड़ गेहूँ का उत्पादन करने के लिए 1633.5 रुपये की एन0पी0के0 प्रयोग की जाती है। 1336 रुपये की यूरिया प्रयोग की जाती है और 100 रुपये ट्राइकोड्रामा दवाई प्रयोग की जाती है। एक एकड़ गेहूँ में 397 रुपये की सी0ओ0सी0 दवाई प्रयोग की जाती है और गेहूँ में गुल्ली डण्डा को खत्म करने के लिए 250 रुपये की दवाई प्रयोग की जाती है, एक एकड़ खेत में 1320 रुपये का गेहूँ का बीज पड़ता है तथा एक एकड़ में 1875 रुपये का जुताई में खर्चा आ जाता है और 1875 रुपये सिंचाई में खर्चा आता है। एक एकड़ में गेहूँ में देखभाल छोड़कर 5850 रुपये मजदूरी में खर्चा आ जाता है तथा पीलीभीत मंडी तक ले जाने में 30 रुपये प्रति क्विन्टल का किराया लगता है। इस प्रकार एक एकड़ गेहूँ उत्पादन करने में लगभग 15086.5 रुपये का खर्चा आता है।

ग्राम परसिया के किसानों से प्रति एकड़ धान और गेहूँ की पैदावार और प्रति एकड़ कुल आय से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गई है। जिसे तालिका संख्या 07 में दर्शाया गया है।

तालिका 07: प्रति एकड़ उत्पाद एवं मूल्य

क्र0 सं0	मद	उत्पाद क्विन्टल में	मूल्य
1.	धान	18	25200
2.	गेहूँ	15	21750
	कुल मूल्य		**46950**

स्रोत–प्राथमिक सर्वेक्षण

एक एकड़ खेत में धान लगभग 18 क्विन्टल हो जाता है और गेहूँ एक एकड़ खेत में 15 क्विन्टल हो जाता है। प्रति एकड़ खेत में दोनों फसलों का कुल उत्पाद मूल्य लगभग 46950 रूपये प्राप्त होता है। जिसमें से 31473 रूपये प्रति एकड़ खेत की लागत में चला जाता है। और मात्र 15477 की बचत होती है। जो एक एकड़ खेत में एक वर्ष में प्राप्त होती है जिसमें देखभाल छोड़ दिया गया है और पुआल और भूसा भी नहीं जोड़ा गया है क्योंकि अगर एक किसान के पास एक भैंस है तो वह उसके खाने के लिए ही हो पाता है।

इस प्रकार एक किसान का पांच सदस्यों का परिवार है और एक एकड़ जमीन है जिससे उसे मात्र 15477 रूपये एक वर्ष में प्राप्त होते हैं। जो प्रति सदस्य 3095.4 के लगभग प्रति वर्ष प्राप्त होते हैं। जो 257 रूपये प्रति माह पड़ता है इस प्रकार एक सदस्य को प्रति दिन 8.59 प्राप्त हो रहे है। इस प्रकार केवल कृषि से परिवार का खर्चा नहीं चल सकता है क्योंकि सरकार के अनुसार 32 रूपये प्रति दिन प्राप्त करता है वह गरीब नहीं है लेकिन इससे कम प्राप्त करने वाले गरीब होते है।

एक छोटा किसान केवल कृषि से खर्चा नहीं चला सकता है उसे खाली समय में मजदूरी भी करनी पड़ती है। जैसे–मनरेगा में काम कर लेता है लेकिन फिर भी उसका जीवन निर्वाह ही हो सकता है लेकिन वह अपना मकान और लड़की या लड़के की शादी कैसे कर पायेगा। अगर एक किसान कृषि को छोड़कर किसी प्राइवेट कम्पनी में अगर उसे 5000 महीने ही प्राप्त होते हैं तो वह कृषि क्यों करेगा। इस प्रकार किसान कृषि को छोड़ने को मजबूर हो रहे है। और एक समय में कृषि चौपट हो जायेगी।

8.3 बढ़ती कृषि उत्पादन लागत एवं किसानों पर पड़ने वाले प्रभाव

जनपद पीलीभीत की तहसील बीसलपुर के ग्राम परसिया क्षेत्र में 100 किसानों का सर्वे किया है। जिससे ग्राम परसिया के किसानों से जानकारी प्राप्त की है। मैंने परसिया के किसानों से सवाल पूँछकर उनसे जानकारी प्राप्त की है।

तालिका 08: ग्राम परसिया में बढ़ती कृषि आगत लागत एवं किसानों की आय और जीवन स्तर की स्थिति का विवरण

क्र0 सं0	बढ़ती कृषि आगत लागत एवं किसानों की स्थिति का विवरण	कृषि आगत लागत का सकारात्मक प्रभाव (प्रतिशत में)	कृषि आगत लागत का नकारात्मक प्रभाव (प्रतिशत में)	कुल प्रतिशत
1.	कृषि आगत लागतें बढ़ने की स्थिति	98	2	100
2.	कृषि उत्पादन से आपकी आय में वृद्धि	13	87	100
3.	कृषि उत्पाद का उचित मूल्य की स्थिति	6	94	100
4.	कृषि उत्पादन की नवीन तकनीक या परम्परागत तकनीक	नवीन तकनीक 84	परम्परागत तकनीक 16	100
5.	कृषि आगत की कीमत लगातार बढ़ने की स्थिति	95	5	100
6.	फसल ओलावृष्टि से प्रभावित होने की स्थिति	96	4	100
7.	कृषि कार्य हेतु ऋण लेते हैं। यह बैंक या साहूकार लेते हैं।	बैंक 96	साहूकार 4	100
8.	गाँव में सरकारी ट्यूबवेल की स्थिति	00	100	100
9.	किसान क्रेडिट कार्ड की स्थिति	52	48	100
10.	फसल का बीमा	8	92	100
11.	खेतों में कार्य करने वाले मजदूरों की मजदूरी लागत बढ़ने की स्थिति	83	17	100
12.	कृषि कार्य करने से आपके जीवन स्तर में सुधार की स्थिति	7	93	100
13.	ग्रामीण विकास की स्थिति	32	68	100

स्रोतः प्राथमिक सर्वेक्षण

उपरोक्त तालिका द्वारा ग्राम परसिया के किसानों की बढ़ती कृषि आगत लागत एवं किसानों के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

ग्राम परसिया में 100 लोगों पर सर्वे किया कि कृषि आगत की लागत बढ़ रही है। या नहीं तो 98 प्रतिशत लोगों ने माना की लागत बढ़ रही है और 2 प्रतिशत लोगों ने कहा कि लागत नहीं बढ़ रही है। इससे जान पड़ता है कि कृषि आगत की लागत बढ़ रही है। जिससे किसानों की स्थिति खराब होती जा रही है और किसानों की आय से सम्बन्धित 100 लोगों का सर्वे किया तो पाया कि 13 प्रतिशत लोगों ने जबाव दिया कि किसानों की आय बढ़ रही है। 87 प्रतिशत लोगों ने जबाव दिया कि किसानों की आय नहीं बढ़ रही है, जिसके कारण किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है।

कृषि उत्पादन के उचित मूल्य की बात करें तो 13 प्रतिशत किसानों ने माना कि कृषि उत्पाद का उचित मूल्य मिलता है और 87 प्रतिशत किसानों ने माना कि कृषि उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिलता है। इससे मालूम होता है कि किसानों को उचित मूल्य मिलता ही नहीं है। जिसके कारण किसानों की फसल कम दामों पर बिकती है। कृषि उत्पादन नवीन तकनीक या परम्परागत तकनीक से होता है तो 84 प्रतिशत किसान नवीन तकनीक से कृषि करते हैं और 16 प्रतिशत किसान परम्परागत तकनीक का प्रयोग करते हैं। अभी भी किसान पूर्ण रूप से नवीन तकनीक का प्रयोग नहीं करते हैं। जिससे उत्पादन कम होता है।

कृषि आगत की कीमत पर 100 किसानों पर सर्वे किया तो पाया गया कि 95 प्रतिशत किसानों ने माना कि आगतों की कीमत लगातार बढ़ रही है। केवल पाँच प्रतिशत किसानों ने माना कि आगतों की कीमत नहीं बढ़ रही है। ओलावृष्टि के बारे में जानकारी प्राप्त की तो पाया गया कि 96 प्रतिशत किसानों की फसल ओलावृष्टि से बर्बाद हो गई, जबकि 4 प्रतिशत किसानों ने माना है। फसल का कोई नुकसान नहीं हुआ है। इससे पता चलता है कि 2015 में किसानों को बहुत नुकसान हुआ है।

कृषि कार्य हेतु ऋण के बारे में जानकारी प्राप्त की गई तो पाया गया कि 96 प्रतिशत लोगों ने कहा कि कृषि कार्य हेतु बैंक से ऋण लेते हैं और 4 प्रतिशत किसान कृषि कार्य के लिए ऋण साहूकार से लेते हैं। इससे पता चलता है कि किसानों को बचत नहीं हो रही है। जिससे किसान लगातार ऋणी होता जा रहा है। गाँव में सरकारी ट्यूववेल के बारे में जानकारी प्राप्त की गई तो पाया गया 100 प्रतिशत किसानों का कहना है कि गाँव में कोई सरकारी ट्यूववेल नहीं है। जिससे सिंचाई सुविधा बेहद खराब है। जिससे उनकी लागत अधिक आती है।

किसान क्रेडिट कार्ड के बारे में 100 किसानों से पूछा गया तो पाया गया कि 52 प्रतिशत किसानों के पास किसान क्रोडिट कार्ड है तथा 48 प्रतिशत किसानों के पास किसान क्रेडिट कार्ड नहीं है, क्योंकि किसान क्रेडिट कार्ड योजना पूर्ण रूप से लागू नहीं है जिससे किसानों को सस्ता ऋण उपलब्ध नहीं होता है।

किसानों के बीमा से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गई तो 8 प्रतिशत किसानों का फसल बीमा है तथा 92 प्रतिशत किसानों का फसल बीमा नहीं है। जिससे किसानों को बीमा नहीं मिल पाता है। खेतों में कार्य करने वाले मजदूरों की मजदूरी लागतार बढ़ती जा रही है। यह तब पता चला कि 83 प्रतिशत किसानों ने कहा कि मजदूरी लगातार बढ़ रही है और 17 प्रतिशत ने कहा कि नहीं बढ़ रही है। किसानों की जीवन स्तर में सुधार से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गई तो 7 प्रतिशत किसान मान रहे हैं कि जीवन स्तर में सुधार हुआ है और 93 प्रतिशत किसान मान रहे हैं कि जीवन स्तर

में कोई सुधार नहीं हुआ है। इसका मतलब है किसानों का जीवन स्तर बहुत खराब है।

ग्रामीण विकास से सम्बन्धित जानकारी में 32 प्रतिशत किसान मान रहे हैं कि ग्रमीण विकास सम्भव है और 68 प्रतिशत किसान मान रहे है कि ग्रामीण विकास सम्भव नहीं है, क्योंकि कृषि से ग्रामीण विकास नहीं हो रहा है, क्योंकि लागत अधिक आ रही हैं। इससे मालूम होता है कि अगर सरकार ने कृषि की ओर ध्यान नहीं दिया तो किसान खेती करना बन्द कर देगा।

9. सुझाव

कृषि उत्पादन से सम्बन्धित सुझाव निम्न प्रकार हैं–

1. किसानों को कृषि लागत कम करने के लिए गोबर की खाद का प्रयोग अधिक करें और उर्वरकों का प्रयोग कम करें। जिससे उत्पादन अच्छा होगा। बीमारी कम लगेगी। किसान अपने खेतों की मिट्टी की जांच अवश्य करायें और खेत में जिस तत्व की कमी हो। उसी का प्रयोग करें।
2. जिस प्रकार बाजार साधन मूल्य को कम्पनी स्वयं तय करती है उसी प्रकार किसानों को कीमत स्वतन्त्र क्षमता विकसित होनी चाहिए कि वे अपने कृषि उत्पाद के मूल्य निर्धारण में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें।
3. किसान बाजार से जो साधन खरीदते हैं उनकी मूल्य वृद्वि पर सरकार का नियन्त्रण रहना चाहिए ताकि कृषकों के कृषि राजस्व का एक बड़ा भाग साधन मूल्य स्फीति की भेंट चढ़ने से बच सके। किसान अधिक आय प्राप्त करने के लिए जैविक खेती एवं सहयोगी खेती जैसे भैंस पालन, कुक्कड पालन, मत्स्य पालन का अधिक उत्पादन करें।

10. निष्कर्ष

एक एकड़ धान और गेहूँ का उत्पादन करने में 31473 की लागत आती है और 46950 रूपये की कुल आय प्राप्त होती है जिसमें 15477 रूपये की एक वर्ष में बचत होती है जो पांच सदस्य के परिवार के लिए बहुत कम है। क्योंकि 15477 रूपये परिवार का खर्चा नहीं चल पाता है। जिससे किसान कृषि छोड़कर प्राईवेट कम्पनी में काम करने चले जाते है जिससे उन्हें कृषि से अधिक आय कम्पनी में काम करने से प्राप्त होती है। क्योंकि जितनी लागत बढ़ती है उतना उत्पादन नहीं बढ़ता है जिससे बहुत कम आय प्राप्त होती है।

सुनिश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि कृषि उत्पादन लागत का लगभग दो–तिहाई भाग कारपोरेट पूँजी नियंत्रित साधनों को बाजार से खरीदा जाता है तथा लगभग एक–तिहाई साधनों की पूर्ति घरेलू तथा पारिवेशिक स्त्रोतों से की जाती है। कारपोरेट नियंत्रित साधनों के मूल्य में अध्ययनगत अवधि में कीमत वृद्वि पारिवेशिक साधनों में मूल्य वृद्वि से डेढ़ से दोगुने तक अधिक है। निष्कर्षतया कहा जा सकता है कि कृषि उत्पाद राजस्व का एक बड़ा भाग कारपोरेट पूँजी के पास साधन मूल्य एवं मूल्य वृद्वि के रूप में चला जाता है। फलतः कृषकों का उत्पाद लाभ नगण्य रह जाता है एवं कृषि दरिद्रता का दुष्चक्र बना रहता है। अतएव कृषि की शाखतता हेतु पारिवेशिक साधनों का अधिक उपयोग एवं बाजार साधनों की कीमतों पर अंकुश अनिवार्य नीतिगत बिन्दु हो सकते हैं।

11. सन्दर्भ

1. सिंह, सुदामा और सिंह, राजीव कृष्ण. भारतीय अर्थव्यवस्था, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2003, 279।
2. यादव, बी0एस0; सिंह, ऋचा और शर्मा, नन्दिनी. भारतीय अर्थव्यवस्था, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, 241. 242।
3. मिश्र, जय प्रकाश. कृषि अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2007, 134।
4. सोनी, आर0एन0 कृषि अर्थशास्त्र, विशाल पब्लिशिंग को0 जालन्धरण. 2004-05, 89।
5. पुरी, वी0के0 और मिश्र, एस0के0. भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई। 2014.
6. वर्मा, वासुदेव. अमर उजाला, बरेली. 2015, 10।
7. वेणु, एम0के0 अमर उजाला, अंक–32, बरेली, 2015, 12।
8. भारत ग्रामीण विकास मन्त्रालय, नई दिल्ली, 2012, 93।